© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 08 , Issue : 04 | October - December 2021

सनातन संस्कृति का पर्व है कुंभ मेला

अभिषेक सिंह परिहार

पी. एच. डी. शोधार्थी

इतिहास विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, (म०प्र०)

सारांश

भारत में सभ्यता का विकास नदियों के किनारे हुआ। नदियों से न सिर्फ यहां के लोगों की आजीविका जुड़ी है, बल्कि इनका सांस्कृतिक महत्त्व भी है। नदियों के किनारे आयोजित होने वाले उत्सवों-सांस्कृतिक आयोजनों में सबसे महत्त्वपूर्ण है कुंभ मेला। प्रयाग यानी इलाहाबाद, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में बारह वर्ष के अंतराल पर कुंभ का आयोजन होता है। इसमें देश के विभिन्न हिस्सों से लाखों लोग स्नान के लिए जुटते हैं। तमाम संत-महात्मा और अखाड़ों का इसमें जमावड़ा तो होता ही है, अनेक सांस्कृतिक आयोजन भी होते हैं।

मूल शब्द : सनातन संस्कृति भारत सभ्यता नदियाँ इत्यादि।

प्रस्तावना

पृथ्वी पर कुंभ मेला (पवित्र पात्र का त्योहार) तीर्थयात्रियों का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण एकजुटता का उत्सव होता है, इस दौरान यहां आने वाले सभी लोग पवित्र नदी में स्नान करते हैं या डुबकी लगाते हैं। भक्तों का मानना है कि गंगा में स्नान करने से कोई व्यक्ति जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त होकर पापों से मुक्त हो जाता है। बिना किसी निमंत्रण के लाखों लोग वहां पहुंचते हैं। इनमें तपस्वी, संत, साधु, महाप्राण-कल्पवासी और अन्य लोग शामिल होते हैं। यह उत्सव हर चार साल में इलाहाबाद (अब प्रयागराज), हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में आयोजित किया जाता है और इसमें जाति, पंथ या लिंग का भेदभाव दूर कर लाखों लोग शामिल होते हैं। यहां आने वाले प्राथमिक आगंतुकों में प्रमुख रूप से अखाड़ों और आश्रमों, धार्मिक संगठनों के लोग होते हैं, या वे लोग जो भिक्षा पर निर्भर रहते हैं। कुंभ मेला देश में एक केंद्रीय आध्यात्मिक भूमिका निभाता है, जो आम भारतीयों पर एक जादुई प्रभाव डालता है। यह घटना खगोल विज्ञान, ज्योतिष, आध्यात्मिकता, कर्मकांड की परंपराओं, और सामाजिक और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों और ज्ञान को अत्यंत समृद्ध बनाती है। जैसा कि हम जानते हैं यह मेला भारत में चार अलग-अलग शहरों में आयोजित होता है, इसमें विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियां शामिल होती हैं, जिससे यह सांस्कृतिक रूप से विविध त्योहार बन जाता है। इस दौरान प्राचीन धार्मिक पांडुलिपियों, मौखिक परंपराओं, ऐतिहासिक यात्रा वृत्तांतों और प्रख्यात इतिहासकारों द्वारा

निर्मित ग्रंथों के माध्यम से परंपरा से संबंधित ज्ञान और कौशल दुनियाभर में पहुंचाए जाते हैं। हालांकि, आश्रमों और अखाड़ों में साधुओं के शिक्षक-छात्र के बीच का संबंध कुंभ मेले से संबंधित ज्ञान और कौशल प्रदान करने और सुरक्षित रखने का सबसे महत्वपूर्ण तरीका है।

यह भारत के लिए गर्व की बात है कि कुंभ मेले को संयुक्त राष्ट्र के शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन 'यूनेस्को' ने अपनी प्रतिष्ठित मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों की सूची में शामिल कर लिया है। यूनेस्को के अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों के दायरे में मौखिक परंपराओं और अभिव्यक्तियों, प्रदर्शन कलाओं, सामाजिक रीतियों-रिवाजों और ज्ञान आदि को ही सम्मिलित किया जाता है। हाल ही में यूनेस्को ने भारत की सांस्कृतिक विरासत योग और नवरोज को भी अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरों की सूची में शामिल किया है। इस तरह कुंभ मेले और योग समेत भारत की कुल चौदह सांस्कृतिक धरोहरें मसलन छऊ नृत्य, लद्दाख में बौद्ध भिक्षुओं का मंत्रोच्चारण, संकीर्तन; मणिपुर में गाने-नाचने की परंपरा, पंजाब में ठठेरों द्वारा तांबे और पीतल के बर्तन बनाने का तरीका और रामलीला आदि यूनेस्को की सूची में शामिल हो चुके हैं। यूनेस्को ने कुंभ मेले को अपनी सांस्कृतिक धरोहरों की सूची में शामिल करने के पीछे जो तर्क दिया है, उसके मुताबिक प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में लगने वाला कुंभ मेला धार्मिक उत्सव के तौर पर सहिष्णुता और समग्रता को रेखांकित करता है। यह खासतौर पर समकालीन दुनिया के लिए अनमोल है। कुंभ मेले को लेकर यूनेस्को की यह उदात्त और पुनीत भावना इसलिए भी सारगर्भित है कि कुंभ सिर्फ हिंदुओं के लिए एक धार्मिक उत्सव नहीं है, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक विरासत की एक महान पूंजी भी है, जिसमें त्याग, तपस्या और बलिदान का भाव निहित है।

दुनिया भर के करोड़ों लोग कुंभ मेले की पवित्रता से अभिभूत होकर खिंचे चले आते हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि 'माघे वृष गते जीवे मकरे चंद्र भाष्करौ, अमवस्याम् तदा कुंभ प्रयागे तीर्थ नायके।' यानी माघ का महीना और गुरु, वृष राशि पर होते हैं। सूर्य और चंद्रमा मकर राशि पर होते हैं और अमावस्या होती है, तब तीर्थराज प्रयाग में कुंभ पर्व पड़ता है। उल्लेखनीय है कि प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक - इन चारों स्थान पर प्रति बारहवें वर्ष कुंभ महापर्व का आयोजन होता है। प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम, हरिद्वार में गंगा, उज्जैन में शिप्रा और नासिक में गोदावरी के तट पर कुंभ महापर्व का आयोजन होता है। हरिद्वार और प्रयाग में दो कुंभ पर्वों के बीच हर छह वर्ष के अंतराल में अर्द्धकुंभ भी लगता है। शास्त्रीय और खगोलीय गणनाओं के अनुसार कुंभ महापर्व की शुरुआत मकर संक्रांति के दिन से होता है और महाशिवरात्रि तक चलता है। मकर संक्रांति के दिन होने वाले इस योग को 'कुंभ स्नान योग'

कहते हैं। शास्त्रों के अनुसार यह दिन मांगलिक होता है और ऐसी मान्यता है कि इस दिन पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार खुलते हैं और कुंभ में स्नान करने से आत्मा को जीवन-मरण के बंधन से मुक्ति मिल जाती है। शास्त्रों में कुंभ स्नान की तुलना साक्षात स्वर्ग दर्शन से की गई है।

शास्त्रों में यह भी कहा गया है कि पृथ्वी का एक वर्ष देवताओं का दिन होता है। इसलिए बारह वर्ष पर एक स्थान पर पुन: कुंभ का आयोजन होता है। शास्त्रों के अनुसार देवताओं का बारह वर्ष पृथ्वी लोक के 144 वर्ष के बाद आता है। इसलिए उस वर्ष पृथ्वी पर महाकुंभ का आयोजन होता है। पौराणिक मान्यता है कि महाकुंभ के दरम्यान गंगा का जल औषधिपूर्ण और अमृतमय हो जाता है और इसमें स्नान करने वाले तमाम विकारों से मुक्त हो जाते हैं। वैसे भी गंगा और यमुना- दोनों ही नदियां भारतीय जन की आराध्य हैं। संस्कृति और सभ्यता की पर्याय हैं। इन्हीं नदी घाटियों में आर्य सभ्यता पल्लवित और पुष्पित हुई। प्राचीन काल में व्यापारिक और यातायात की सुविधा के कारण देश के अधिकांश नगर नदियों के किनारे ही विकसित हुए। आज भी देश के लगभग सभी धार्मिक स्थल किसी न किसी नदी से संबद्ध हैं। गंगा और यमुना की महत्ता इस अर्थ में भी ज्यादा है कि देश की एक बड़ी आबादी इनके जल से प्राणवान और उर्जावान है। इन दोनों नदियों का विशेष उसका आर्थिक सरोकार भी है। गंगा घाटी में देश की तिरालीस फीसद आबादी निवास करती है। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उनकी जीविका गंगा पर ही निर्भर है।

सनातन संस्कृति

यदि हम कुंभ की बात करें और सनातन धर्म को आत्मसात ना किया जाए तो कुंभ कदाचित् अपूर्ण ही रह जाएगा. “कुंभ” अर्थात मनुष्य नैसर्गिक प्रकृति के बीच श्रद्धा व सत्य बोध का दिव्य वार्तालाप”, 'सत्य बोध' का साक्षात उदाहरण है साधु एवं साध्वियों का वह समूह जो अपने ही पिंड का दान करके नव जीवन में प्रवेश करते हैं। वद जीवन जो सनातन धर्म के उद्देश्यों का मूलभूत स्वरूप है, सनातन धर्म का मूलभूत उद्देश्य मानव जीवन का “मनुष्यत्व' ही है। सनातन संस्कृति कोई कृति या काल्पनिक पदार्थ नहीं कितु अखंड और आदत सत्य है तथा मानव समाज का कल्याण ही उसका अवलंबित है। 'मनुष्यत्व” अर्थात सहिष्णुता, त्याग, शांति, श्रद्धा, विश्वास, योग एवं भक्ति के भावों का संग्रह! सनातन धर्म के उद्देश्यों को मनुष्य के विविध भावों से अभिव्यक्त किया जा सकता है। यह भाव किसी व्यक्ति विशेष को प्रभावित नहीं करता, यह भाव सर्वस्व के विकास का मूल है. सनातन संस्कृति के उद्देश्यों में "त्याग व शांति” के

साक्षात स्वरूप को भी कुंभ में प्रतिबिम्बित होते देखा जा सकता है। "त्याग" का साक्षात स्वरूप हैं, वे नागा साधु एवं साध्वियाँ जो वस्त्रों एवं समस्त सांसारिक जीवन की लिप्साओं को त्याग कर हृदयिक शांति को प्राप्त करने को अग्रसर हैं। कुंभ में विविध पंथों के गुरु व आचार्य द्वारा भक्तों को जीवन के शाश्वत मूल्यों की जानकारी देने वाले विविध धर्मस्थल प्रदीप्त हो उठते हैं। जहां किसी भी जाति का गुरु है, उनके शिष्य किसी भी जाति या वर्ण के मिलेंगे। शिवभक्त हों या वैष्णव, उदासीन हों या निर्वाणी, रविदास पंथी हों या कबीर पंथी, उनके पीठों पर सबके मस्तक नत हो जाते हैं। सनातन धर्म में मनुष्य व नैसर्गिक प्रकृति के बीच श्रद्धा को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। प्रकृति अर्थात पर्वत, नदी, सूर्य, चंद्रमा, अग्नि आदि का वंदन! कंभ द्वारा "नदी" एवं "जल" की प्रधानता को मुखरित किया जाता है। जल सृष्टि का आदिम आधार है। जल से ही सृष्टि के सभी चराचर पदार्थ, वनस्पतियाँ व जीव जन्तु उत्पन्न एवं विकसित होते हैं तथा इसी जल के कारण संसार के सभी तीर्थ महिमा मंडित होते रहे हैं।

उपसंहार

हमारे देश में सबसे बड़ा हिंदुओं का आयोजित किए जाने वाला यह कुंभ मेला कहलाता है। यह हिंदुओं के लिए सामूहिक तीर्थ मेला कहलाता है और यहां पर बड़ी मात्रा में हिंदू भाई बहन और साधु संत एवं पर्यटन सेनानी भी इकट्ठा होते हैं और पवित्र नदी में स्नान करके इस त्योहार को मनाते हैं। कुंभ का मेला प्राचीन काल से ही चला आ रहा है और अब भी हिंदुओं में इसकी मान्यता खत्म नहीं हुई है। बाहर देश में रहने वाले विदेशी समेत हिंदू मूल के निवासी भी एक बार जरूर इस पावन पर्व में शामिल होते हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस पावन उत्सव के दिन नदी में स्नान करने पर शरीर के रोग, कष्ट और पाप आदि धूल जाते हैं। इस पावन पर्व के शुभ अवसर पर भारत के अलग-अलग स्थानों पर हर 4 वर्ष के समय अवधि में इस कुंभ मेले का विशालकाय आयोजन किया जाता है। इस मेले में साधु संत भगवे रंग को धारण करके उपस्थित होते हैं और स्नानादि करके भगवान की पूजा आराधना करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अर्थववेद: चौखमभा संस्कृत सीरीज, वाराणसी 1968।
2. भागवत पुराण: गीता प्रेस गोरखपुर सं. 2008 |
3. तीथानांक कल्याण: गीता प्रेस, गोरखपुर, 31वां वर्ष विशेषांक |
4. सिंह रुचि: कुंभ मेला अनुष्ठानो और विश्वास की झलक |

5. दुबे डी.पी.: कुंभ मेला महान ब्रह्मांडीय मेले के लिए तीर्थ यात्रा, इलाहाबाद एस पी.एस 2001 एव 2013 |
6. दुबे डी.पी.: प्रयाग कुंभ मेला का स्थल नईं दिल्ली 2001 |
7. खन्ना तरुण जेनीफर : कुंभ मेला मैपिंग दि इफारमल मेगा सिटी का |
8. लीनिग और जॉन मैकोम्बर: मानचित्रण एस.ए.आई. हावर्ड वि.वि. |
9. श्रीवास्तव शालिग्राम : प्रयाग प्रदीप हिदुस्तान एकेडमी इलाहाबाद संस्करण 2016 |
10. अग्रवाल वी.एस.. प्राचीन भारतीय लोकधर्म, पृथ्वी प्रकाशन वाराणसी 1964 |
11. ओम प्रकाश व ब्रजराज स्वरुप: भारतीय संस्कृति एव धर्म मुज्जफर नगर 1967
12. धर्मानंद दामोदर:. प्राचीन भारत में संस्कृति व सभ्यता।
13. पाडे, गोंविद चन्द्र: भारतीय संस्कति म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी बाणगंगा भोपाल, 1989 |